अनुशासनपर्व कथासार

अनुशासनपर्व महाभारत के तेरहवाँ पर्व है। इसमें दानधर्मपर्व तथा भीष्मस्वर्गारोहणपर्व नामक दो उपपर्व हैं। इसमें कुल मिलाकर ९६४१ श्लोक हैं।

१. दानधर्मपर्व

इस उपपर्व में (१-१६६) अध्याय तथा ९५५२ श्लोक हैं। युधिष्ठिर के प्रश्नों के उत्तर के रूप में भीष्म ने अनेक प्रकार के धर्मों का उपदेश दिया। उन्हें सुनकर उन्होंने भीष्म से कहा कि हे पितामह! आपने शान्ति गुण के नानाविध तत्त्वों का वर्णन किया। लेकिन उन्हें सुनकर भी मुझे शान्ति नहीं मिली। हे नरेश्वर! आप को इस दुरवस्था में भूमि पर पडा देख मुझे शान्ति नहीं मिलती। दुर्योधन की मृत्यु को मैं श्रेष्ठ समझता हूँ क्यों कि वह आपकी इस दुरवस्था को नहीं देखता है। आप मुझे ऐसा उपदेश दीजिए जिससे परलोक में भी मुझे इस पाप से छुटकारा मिल सके। इसके उत्तर में भीष्म ने गौतमी नामवाली एक बूढी ब्राह्मणी, अर्जुनक नामक व्याध, सर्प, मृत्यु और काल के संवाद रूप प्राचीन इतिहास को सुनाकर कहा कि हे राजन्! सारा जगत् काल स्वरूप है। तुमने या दुर्योधन ने कुछ नहीं किया। कालाधीन होने से समस्त भूपाल मारे गये हैं। उनकी बात सुनने से युधिष्ठिर की चिन्ता दूर हो गयी और उसने फिर पूछा कि हे नरश्रेष्ठ! केवल धर्म का आश्रय लेकर किस गृहस्थ ने मृत्यु पर विजय पाया। इस संदर्भ में भीष्म ने अग्निपुत्र सुदर्शन का वृत्तान्त सुनाया जिसने अतिथि सत्कार से मृत्यु को जीत लिया। विश्वामित्र जिस प्रकार ब्राह्मणत्व तथा ब्रह्मर्षित्व प्राप्त किया उस वृत्तान्त को सुनाते हुए विश्वामित्र के जन्मवृत्तान्त बताया। इन्द्र और तोते के संवाद के द्वारा दयालु और भक्त पुरुषों के गुणों का वर्णन किया। वशिष्ठ और ब्रह्मा के संवाद के द्वारा दैव की अपेक्षा पुरुष प्रयत्न की श्रेष्ठता बताया। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने कर्मफल तथा पूज्य और नमस्कार योग्य पुरुषों का वर्णन किया। सियार और वानर के संवाद का उल्लेख करते हुये कहा कि ब्राह्मण को दान देने से देवता और पितर तृप्त होते हैं। इसलिए बुद्धिमान् पुरुष ब्राह्मण को अवश्य दान दे। शूद्र और तपस्वी ब्राह्मण की कथा सुनाकर अनधिकारी को उपदेश देना क्लेशकारक कहा। लक्ष्मी जिन पुरुषों में निवास करती है, जिनमें नहीं करती इसका विशद वर्णन किया। भङ्गास्वन नामक राजर्षि के वृत्तान्त को सुनाकर कहा कि विषयभोग में पुरुष की अपेक्षा स्त्री को अधिक सुख प्राप्ति होती है।

भीष्म ने उपदेश दिया कि हे राजन्! दूसरों के प्राणनाश करना, चोरी करना, परदाराभिगमन ये तीन शरीर से होनेवाले पाप हैं। बुरी बातें करना, परुष वचन, पिशुनत्व और असत्य बोलना ये चार वाणी से होनेवाले पाप हैं। दूसरों के धन का लालच करना, समस्त प्राणियों से वैर रखना, कर्म फल पर विश्वास न करना ये तीन मन से होनेवाले पाप हैं। इन दस तरह के पापों का त्याग करना है। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने भगवान् शङ्कर के माहात्म्य का वर्णन करने

को श्रीकृष्ण से प्रार्थना की। भगवान् वासुदेव ने शिव के माहात्म्य और गुणों का वर्णन किया। वासुदव ने शिवसहस्रनामस्तोत्र और उस पाठ का फल भी सुनाया और कहा कि जो मनुष्य इन्द्रिय निग्रह के साथ एक वर्ष तक इस स्तोत्र का पाठ करता है उसे अश्वमेध यज्ञ
का फल मिलता है। व्यासमहर्षि ने युधिष्ठिर के शिवसहस्रनाम स्तोत्र पाठ करने का उपदेश दिया। युधिष्ठिर ने पूछा कि हे भरतश्रेष्ठ! स्त्रियों के लिए विवाहकाल में सहधर्म की बात कही जाती है वह कैसे संगत होता है? पति और पत्नी में से एक की पहले मृत्यु होती है तब एक व्यक्ति में सहधर्म कैसे होती है? इसके उत्तर में भीष्म ने अष्टावक्र मुनि और उत्तर दिशा का संवाद सुनाया। स्वर्गगामी और नरकगामी मनुष्यों के लक्षण बताया। विभिन्न तीर्थों के महिमा का वर्णन किया। नानाविध उपाख्यानों के द्वारा ब्राह्मणत्व प्राप्ति का उपाय सुनाया। भगवान् श्रीकृष्ण और महर्षि नारद के संवाद के द्वारा तीनों लोकों में पूजनीय पुरुषों का परिचय दिया। स्त्रियों की रक्षा के विषय में विभिन्न संवाद सुनाया। कन्यादान के लिए योग्य व्यक्ति का विचार किया। ब्राह्मण आदि चार वर्ण के पुत्रों को पैतृक धन बाँटने का विधान बताया। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने वर्णसांकर्य का विस्तार से परिचय दिया। गाँवों की महानता का वर्णन संदर्भ में च्यवन और नहुष का संवाद सुनाया।

युधिष्ठिर ने भीष्म से पूछा कि हे पितामह! राज्याधिकार पाने के लिए हमें करोडों पुरुषों का वध करना पडा। इसलिए हम निस्संशय नरक में पडेंगे। इसलिए मैं अपने शरीर को कठोर तपस्या के द्वारा सूखा डालना चाहता हूँ। इस सन्दर्भ में मुझे उपदेश दीजिए। भीष्म ने उसके प्रश्न के उत्तर के रूप में मनुष्य को मरने पर किस कर्म से कौन सी गति मिलती है, इस विषय को सुनाया। बगीचे तथा जलाशय बनवाने का फल बताया। उन्होंने बताया कि दान और यज्ञ करना क्षत्रिय का प्रधान कर्तव्य है। सदा राजा को प्रजा की रक्षा करना चाहिए। राजा से अरक्षित प्रजा जो कुछ पाप करते हैं उसमें चौथा भाग राजा को प्राप्त होता है। राजा से रक्षित प्रजा जो कुछ पुण्य कर्म करती है उसमें चौथा भाग राजा प्राप्त कर लेता है। सब दानों में भूमिदान सर्वोत्तम है। युधिष्ठिर ने पूछा कि हे तात! ब्राह्मणों को किन किन वस्तुओं का दान करना है? उसका फल क्या है? इसके उत्तर में भीष्म ने अन्नदान का माहात्म्य बताया। उसने कहा कि अपने कल्याण चाहनेवाला पुरुष को अन्न चाहनेवाले सब को अन्न की दान करना चाहिए। अपने घर पर कोई भी आजाय उसका न तो कभी अपमान करना है। चण्डल अथवा कुत्ते को भी दिया हुआ अन्नदान कभी व्यर्थ नहीं होता। भिन्न भिन्न नक्षत्रों के योग में विभिन्न वस्तुओं के दान का फल बताया। जूते, शकट, तिल, भूमि आदि के दान का महत्त्व सुनाया। ब्राह्मण और यम के संवादरूप इतिहास के द्वारा तिल, जल, दीप तथा रत्न आदि के दान का फल बताया। राजा नृग का उपाख्यान सुनाकर उपदेश दिया कि ब्राह्मण के धन का न कदापि अपहरण करना चाहिए। उद्दालक ऋषि और नचिकेत के उपाख्यान के द्वारा गोदान की महिमा

बताया। उसने कहा कि गो की हत्या करनेवाले, उसका मांस खानेवाले तथा गोहत्या का अनुमोदन करनेवाले लोग गो के शरीर में जितने रोम होते हैं उतने वर्षों तक नरक में डूबे रहते हैं। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने सुवर्ण का विधि पूर्वक दान करने से वेदोक्त फल बताया। तारकासुरवधवृत्तान्त सुनाया। श्राद्धविधि तथा उसमें दान देने योग्य वस्तुओं का परिचय दिया। भगवान् श्रीकृष्ण तथा पृथ्वी का संवाद सुनाकर गृहस्थधर्मों का उपदेश दिया। माता, पिता, आचार्य आदि गुरुजनों के गौरव का वर्णन किया। उसने कहा कि गौरव में दस आचार्यों से बढकर उपाध्याय, दस उपाध्यायों से बढकर पिता, दस पिताओं से बढकर माता है। माता अपने
गौरव से समस्त पृथ्वी को भी तिरस्कृत करती है। इसलिए माता के समान कोई गुरु नहीं है। पिता की मृत्यु हो जाने पर बडे भाई को ही पिता के समान समझना चाहिए। पिता और माता केवल शरीर की सृष्टि करते हैं। आचार्य तो ज्ञानोपदेश करते हैं। वह सत्य अजर और अमर है। बडी बहिन तथा बडे भाई की पत्नी भी माता के समान है।

युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने उपवासव्रत और उसके फल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। अहिंसा की प्रशंसा करते हुए कहा कि अहिंसा परम धर्म है, परम संयम है। परम दान है, परम तपस्या है, परम यज्ञ है, परम फल है, अहिंसा परम मित्र है और अहिंसा परम सुख है। विभन्न संवादों को सुनाकर भीष्म ने धर्म के रहस्य का वर्णन किया। विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का वर्णन करके उसका महत्त्व बताया। भगवान् श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन किया। युधिष्ठिर के पूछने पर भगवान् वासुदेव ने शङ्कर के महानता का वर्णन किया। भीष्म ने इस प्रकार युधिष्ठिर के संशयों की निवृत्ति की। तदनन्तर युधिष्ठिर भीष्म की अनुमति पाकर सपरिवार हस्तिनापुर गये।

२) भीष्मस्वर्गारोहणपर्व

हस्तिनापुर जाने के बाद युधिष्ठिर ने सब लोगों को यथोचित सम्मान करके उन्हें अपने अपने घर जाने की अनुज्ञा दी। उसने भीष्म की बातों की याद की। जब सूर्यभगवान् दक्षिणायन से निवृत्त होकर उत्तरायण की ओर प्रवृत्त हो गया तब युधिष्ठिर याजकों से हस्तिनापुर से बाहर निकला। उसने भीष्म के संस्कार के लिए अमूल्य वस्तु भेजा। राजा युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र, गान्धारी कुन्ती तथा अन्य पाण्डवों के साथ भगवान् श्रीकृष्ण, विदुर, युयुत्सु तथा सात्यकि भीष्मजी के पास पहुँचे। महर्षि व्यास, नारद और देवल ऋषि भीष्म के पास बैठे थे। अन्य नरेश भी वहाँ उपस्थित थे। बाणशय्या पर सोये भीष्म को प्रणाम करके युधिष्ठिर ने कहा कि हे पितामह! हम सब आप की सेवा में उपस्थित हैं। आँखें खोलकर देखिए। आपके वचन के अनुसार जिन वस्तुओं की आवश्यकता थी उन सबको यहाँ पहुँचा दिया। युधिष्ठिर के इस प्रकार कहने पर भीष्म ने आँखे खोलकर वहाँ के सब भरतवंशियों को देखा और युधिष्ठिर की हाथ पकडकर

कहा कि हे युधिष्ठिर! सौभाग्य की बात है कि आप सब यहाँ आ पहुँचे। भगवान् सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर लौट चुके हैं। बाणशय्या पर शयन करते हुए आज मुझे अट्ठावन (५८) दिन हो गये। इस समय चान्द्रमास के अनुसार माघमास प्राप्त हुआ है। शुक्ल पक्ष चल रहा है। इसका एक भाग बीत चुका है और तीन भाग बाकी है। (माघ शुक्ल अष्टमी) इसके बाद धृतराष्ट्र को बुलाकर उससे कहा कि हे राजन्! तुम वेद शास्त्रों का रहस्य पूर्णरूप से जानते हो। भूतकालिक घटना से तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए। पाण्डव भी आपके पुत्र जैसे हैं। पुत्र के समान उनका पालन करो। तुम्हारे पुत्र दुरात्मा थे। उनके लिए शोक नहीं करना चाहिए। उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण से कहा कि हे भगवन्! आपको प्रणाम । मेरी रक्षा करें। अब मुझे जाने की आज्ञा दें। मैं जानता हूँ कि आप पुरातन ऋषि नारायण हैं। इस शरीर का त्याग करने के लिए मुझे अनुज्ञा दीजिए। श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं आपको आज्ञा देता हूँ। आप वसुलोक जाइये। आप ने कुछ भी पाप नहीं किया। भीष्म ने पाण्डवों तथा अन्य लोगों से कहा
कि अब मुझे देह त्याग की आज्ञा दीजिए। आप सदा सत्य धर्म का पालन कीजिए। सत्य ही सब से बडा बल है। वे युधिष्ठिर को आचार्य तथा ऋत्विजों की सदा पूजा करने का उपदेश देकर दो घडी तक चुपचाप पडे रहे। योग मार्ग के द्वारा उनके प्राण ऊपर चले गये। उस समय व्यास आदि महर्षियों ने आश्चर्य से देखा कि भीष्म के प्राण जिस अङ्ग को छोडकर ऊपर चले जाते थे, उस उस अङ्ग के बाण अपने आप निकल जाते और उनका घाव भर जाता था। इस प्रकार क्षण भर में उनका शरीर बाण रहित हो गया। उसने योगशक्ति से सभी द्वारों को बंद करने से मस्तक फोडकर प्राण आकाश में चले गये। फिर पाण्डवों ने विधि पूर्वक दहन संस्कार किया। भगवान् श्रीकृष्ण और व्यास ने पुत्रशोक से संतप्त गङ्गादेवी का आश्वासन दिये।

।। अनुशासनपर्व कथासार समाप्त ।।